(15)

22/5/18

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : .....

Sl. No. of Q. Paper : **4960A** **HC**

Unique Paper Code : 62051201

Name of the Course : **B.A.(Programme) Hindi Discipline-CBCS**

Name of the Paper : Hindi Kavita (Madhyakal Aur Aadhunik Kal)

Semester : II

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 75***

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

Instructions for Candidates :

छात्रों के लिए निर्देश :

Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.

इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

1. किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 20

(क) कबीर माला पहरया कुछ नहीं, गांठि हिरदा की खोई।
हरि चरनों चित राखिये, तौ अभयपुर होई।।
कबीर केसौ कहा बिसाड़िया, जे मूड़ै कै बार।
मन को काहे न मूंडिए, जामैं विषै विकार।।

P.T.O.

(ख) अति सूधो स्नेह को मारग है जहां नेकु सयानप बांक नहीं।
तहँ साँच चलै तजि आपनपौ, झिझकै कपटी जे
निसांक नहीं।
घन आनंद प्यारे सुजान सुनौ, यही एक ते दूसरो
आँक नहीं।
तुम कौन सी पाटी पढ़े हो लला, मन लेहु पै देहु
छटाँक नहीं।।

(ग) यों तो सभी का बीतता है बाल्यकाल विनोद में,
वे किन्तु सोते-जागते रहते सदा है गोद में।
इस भाँति पल कर प्यार में जब वे सपूत बढ़े हुए,
उत्पात उनके साथ ही घर में अनेक खड़े हुए।।

(घ) जी पहले कुछ दिन शर्म लगी मुझको
पीछे-पीछे अक्ल जगी मुझको
जी लोगों ने तो बेच दिए ईमान।
जी, आप न हों सुनकर ज्यादा हैरान
मैं सोच समझकर आखिर
अपने गीत बेचता हूँ,
जी हाँ, हुजूर मैं गीत बेचता हूँ।

2. संत कबीरदास की युगीन चेतना पर प्रकाश डालिए। 13

अथवा

सूरदास की भक्ति-भावना पर विचार कीजिए।

3. घनानंद 'प्रेम की पीर' के कवि हैं, स्पष्ट कीजिए। 13

अथवा

'बीती विभावरी जाग री' कविता में अभिव्यक्त प्रकृति चित्रण का निरूपण कीजिए।

4. नागार्जुन की जनवादी चेतना पर विचार कीजिए। 13

अथवा

'जो बीत गई सो बात गई' कविता की संवेदना पर प्रकाश डालिए।

5. निम्नलिखित में से किसी **एक** कवि का साहित्यिक परिचय लिखिए – 8

बिहारी

भवानीप्रसाद मिश्र

6. 'रइंसों के सपूत' कविता में निहित व्यंग्य का विवेचन कीजिए। 8

अथवा

निम्न पंक्तियों का रचना कौशल लिखिए :

सिन्धु सा विस्तृत और अथाह
एक निर्वासित का उत्साह,
दे रही अभी दिखाई,
भग्न-मग्न रत्नाकर में वह राह।

16

[This question paper contains 4 printed pages.]

2018

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4982A **HC**

Unique Paper Code : 62051201

Name of the Paper : Hindi Kavita (Madyakal Aur Aadhunik Kaal)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi – CBCS**

Semester : II

DESHBANDHU COLLEGE
LIBRARY
Kalkaji, New Delhi-19

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए - (20)

(क) मैया मैं नहिं माखन खायौ।

ख्याल परैं ये सखा सबै मिलिं, मेरैं मुख लपटायौ।

देखि तुहीं सींकै पर भाजन, ऊँचै धरि लटकायौ।

हौं जु कहत नान्हे कर अपनै मैं कैसे करि पायौ।

मुख दधि पोंछि, बुद्धि इक कीन्ही, देना पीठि दुरायौ।

डारि साँटि मुसुकाइ, जसोदा, स्यामहिं कंठ लगायौ ।

बाल-विनोद मोद मन मोह्यौ, भक्ति प्रताप दिखायौ ।

सूरदास जसुमति कौ यह सुख, सिव बिरंचि नहिं पायौ ।।

(ख) नहिं परागु नहिं मधुर मधु, नहिं बिकास इहिं काल ।

अली, कली ही सौं बँध्यों, आगें कौन हवाल ।।

अंग-अंग नग जगमगत दीपसिखा सी देह ।

दिया बढ़ाऐं हूँ रहै बड़ौ उज्यारौ गेह ।।

(ग) हिमालय के आँगन में उसे प्रथम किरणों का दे उपहार,

उषा ने हँस अभिनंदन किया और पहनाया हीरक हार ।

जगे हम, लगे जगाने विश्व लोक में फैला फिर आलोक ।

व्योम तम-पुंज हुआ तब नष्ट अखिल संस्कृति हो उठी अशोक ।।

(घ) यह गीत पहाड़ी पर चढ़ जाता है

यह गीत बढ़ाए से बढ़ जाता है

यह गीत भूख और प्यास भगाता है

जी, यह मसान में भूत जगाता है

यह गीत भुवाली की है हवा हुजूर

यह गीत तपेदिक की है दवा हुजूर

जी, और गीत भी हैं दिखलाता हूँ

जी, सुनना चाहें आप तो गाता हूँ

मैं सीधे-सादे और अटपटे

गीत बेचता हूँ

जी हाँ हुजूर मैं गीत बेचता हूँ ।।

2. कबीरदास की सामाजिक चेतना का विवेचन कीजिए ।

अथवा

तुलसीदास की भाषा-शैली की विशेषताएँ लिखिए । (13)

3. घनानंद की प्रेम-व्यंजना पर विचार कीजिए ।

अथवा

'रईसों के सपूत' कविता का कथ्य स्पष्ट कीजिए। (13)

4. 'जो बीत गई सो बात गई' कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

'उनको प्रणाम' कविता के आधार पर नागार्जुन की भाषा-शैली पर विचार कीजिए । (13)

5. निम्नलिखित में से किसी **एक** कवि का साहित्यिक परिचय लिखिए - (8)

(i) सूरदास

(ii) मैथिलीशरण गुप्त

6. तुलसीकृत दोहावली में कवि के नीति संबंधी विचारों को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'बीती विभावरी जाग री' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए। (8)

(17) 16/5/18

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : .....

Sl. No. of Q. Paper : **4995** **HC**

Unique Paper Code : 62051202

Name of the Course : **B.A.(Programme) Hindi-CBCS**

Name of the Paper : Hindi-A

Semester : II

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 75***

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

Instructions for Candidates :

छात्रों के लिए निर्देश :

(a) Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.

इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) Attempt **all** the questions.

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10×3=30

(क) कबीर इस संसार को, समझाऊँ कै बार।

पूंछ जू पकड़ै भेद की, उतर्‌या चाहै पार।।
जप तप दीसैं थोथरा, तीरथ ब्रत बेसास।
सूवै सैं बल सेविया, यौं जग चल्या निरास।।

अथवा

तनक हरि चितवाँ म्हारी ओर।
हम चितवाँ थें चितवो णा हरि, हिवड़ों बड़ो कठोर।
म्हारी आसा चितवणि थारी, ओर णा दूजा ठौर।
ऊभ्याँ ठाढ़ो अरज करूँ छूँ करताँ करताँ भोर।
मीरा रे प्रभु हरि अविनासी देस्यूँ प्राण अँकोर।।

(ख) मरतु प्यास पिंजरा-पर्‌यौ, सुआ समै कैं फेर।
आदरु दै दै बोलियतु बाइसु बलि की बेर।।
नीच हियैं हुलसे रहैं, गहे गेंद के पोत।
ज्यौं ज्यौं माथैं मारियत, त्यौं त्यौं ऊँचे होत।।

अथवा

रूपनिधान सुजान लखें बिन आंखिन दीठि हि पीठि दई है।
ऊखिल ज्यौं खरकै पुतरीन मैं, सूल की मूल सलाक भई है।
ठौर कहूँ न लहै ठहरानि को मूदें महा अकुलानिमई है।
बूड़त ज्यौ घनआनँद सोचि, दई बिधि ब्याधि असाधि नई है।।

(ग) अधिकार खोकर बैठ रहना, यह महा दुष्कर्म है।
न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म है।
इस तत्त्व पर ही कौरवों से पाण्डवों का रण हुआ,
जो भव्य भारतवर्ष के कल्पान्त का कारण हुआ।।

अथवा

कितनी मणियाँ लुट गईं ? मिटा
कितना मेरा वैभव अशेष !
तू ध्यान-मग्न ही रहा; इधर
वीरान हुआ प्यारा स्वदेश।

2. किसी **एक** कवि का साहित्यिक परिचय दीजिए : 10

(क) मैथिलीशरण गुप्त;

(ख) रामधारी सिंह दिनकर।

3. कबीर की कविताओं में व्यक्त सामाजिक-चेतना पर विचार कीजिए। 10

अथवा

मीरा की भाषा पर विचार कीजिए।

4. बिहारी की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 10

अथवा

'घनानंद वियोग-शृंगार के कवि हैं' स्पष्ट कीजिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : 5×3=15

(क) आधुनिक भारतीय भाषाएँ;

(ख) पश्चिमी हिंदी;

(ग) कृष्ण-काव्य;

(घ) रीति-मुक्त काव्य;

(ङ) छायावाद;

(च) हिंदी उपन्यास।

18

16/5/18

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : .....

Sl. No. of Q. Paper : **4996** **HC**

Unique Paper Code : 62051203

Name of the Course : **B.A.(Programme) Hindi CBCS**

Name of the Paper : Hindi-B

Semester : II

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 75***

Instructions for Candidates :

छात्रों के लिए निर्देश :

(a) Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.

इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) **All** questions are compulsory.

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं **तीन** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10

(क) यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान।
शीश दियो जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान।।

P.T.O.

अथवा

पद कमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं।
मोहि राम राउरि आन दसरथ सपथ्थ सब साँची कहौं।।
बरु तीर मारहूँ लखनु पै जब लगि न पाँय पखारिहौं।
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पारु उतारिहौं।।

(ख) बतरस-लालच लाल की, मुरली धरी लुकाइ। 10
सौंह करैं भौंहनु हंसें, दैन कहैं नटि जाइ।।

अथवा

इंद्र जिमि जम्भ पर बाडव सुंअभ पर, रावण सदम्भ
पर रघुकुल राज हैं।
पौन बारिबाह पर संभु रतिनाह पर, ज्यौं सहस्रबाहु पर
राम द्विजराज हैं।
दावा द्रुमदंड पर चीता मृग झुंड पर, भूषन बितुंड पर
जैसे मृगराज हैं।
तेज तम अंस पर कान्ह जिमि कंस पर, यों मलेच्छ-बंस
पर सेर सिवराज हैं।

(ग) यह मेरी गोदी की शोभा 10

सुख सुहाग की है लाली।
शाही शान भिखारिन की है
मनोकामना मतवाली।।

अथवा

काट अंध-उर के बंधन - स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर;
कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे !

2. कबीर **अथवा** तुलसी का साहित्यिक परिचय दीजिए। 10

3. पाठ्य-क्रम में निर्धारित भूषण **अथवा** बिहारी की कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए। 10

4. 'बालिका का परिचय' **अथवा** 'वर दे वीणा वादिनी वर दे' कविता का सार लिखिए। 10

5. (क) निम्नलिखित में से किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : 5

(i) हिन्दी उद्‌भव
(ii) आधुनिक भारतीय भाषाएँ

(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : 5+5=10

(i) रासो काव्य ;

(ii) रामभक्ति काव्य ;

(iii) रीति काल ;

(iv) भारतेंदु युग ।

19

12/5/18

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : .....

Sl. No. of Q. Paper : **4997** **HC**

Unique Paper Code : 62051204

Name of the Course : **B.A.(Programme) Hindi CBCS**

Name of the Paper : Hindi-C

Semester : II

DESHBANDHU COLLEGE
LIBRARY
Kalkaji, New Delhi-19

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 75***

Instructions for Candidates :

छात्रों के लिए निर्देश :

(1) Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.

इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(2) **All** questions are compulsory.

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. (क) सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10×3=30

कबीर संगति साध की, करे न निरफल होई।
चंदन होसी बाँवना, नींब न कहसी कोई।।

P.T.O.

अथवा

ऊधौ मन प भए दस बीस।
एक हुतौ सो गयौ स्याम सँग, को अवराधै ईस।
इंद्री सिथिल भई केसव बिनु, ज्यौं देही बिनु सीस।
आसा लागि रहित तन स्वासा, जीवहिं कोटि बरीस।
तुम तौ सखा स्याम सुंदर के, सकल जोग के ईस।
सूर हमारैं नंद-नंदन बिनु, और नहीं जगदीस।

(ख) थोरे ही गुन रीझते, बिसराई वह बानि।
तुमहूँ कान्ह मनौ भए, आज काल्हि के दानि।।

अथवा

रावरे रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यौं
ज्यौं निहारियै।
त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहि
आन तिहारिये।
एक ही जीव हुतौ सु तौ वार्‌यो सुजान सकोच औ
सोच सहारियै।
रोकी रहै न, दहै घनंआनंद बाबरी रीझ के हाथनि
हारियै।।

(ग) करके विधि वाद न खेद करो
निज लक्ष्य निरेतर भेद करो
बनता बस उद्यम ही विधि है

मिलती जिससे सुख की निधि है
समझो धिक् निष्क्रिम जीवन को
नर हाक न निराश करो मन को
कुछ काम करो, कुछ काम करो।।

अथवा

निर्निमेष क्षण भर, मैं उनको रहा देखता,
सहसा मुझे स्मरण हो आया, कुछ दिन पहले,
बीज सेम के रोपे थे मैंने आँगन में
और उन्हीं से बौने पौधों की यह पलटन
मेरी आँखों के सम्मुख अब खड़ी गर्व से
नन्हें नाटे पैर पटक, बढ़ती जाती है।

2. बिहारी की श्रृंगार भावना पर प्रकाश डालिए। 10

अथवा

घनानंद का साहित्यक परिचय दीजिए।

3. कबीर की भाषा को स्पष्ट कीजिए। 10

अथवा

सूरदास के काव्य में वर्णित बाल-लीला पर प्रकाश डालिए।

4. 'नर हो न निराश करो मन को' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। 10

अथवा

'आह धरती कितनी देती है' कविता के काव्य सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : 5×3=15

(i) पूर्वी हिंदी की बोलियाँ

(ii) छायावाद अथवा प्रयोगवाद

(iii) रामभक्ति धारा

(iv) रीतिमुक्त काव्य की प्रवृत्तियाँ

(v) रासो-साहित्य